साहित्यसुधा

साहित्यकारों की वेबपत्रिका

साहित्यकारों की रचना स्थली

वर्ष: 3, अंक 56, मार्च(प्रथम) , 2019

चिठ्ठी-पत्री,खतोकिताबत के मौसम फ़िर कब आएंगे?..

गोवर्धन यादव

चिठ्ठी-पत्री का जमाना बीते अभी ज्यादा समय नहीं हुआ है. एक समय वह था, जब हमें चिठ्ठियों का बड़ी बेसब्री से इन्तजार हुआ करता था. घर-परिवार से यदि हफ़्ता-पंद्रह दिन के भीतर कोई पत्र नहीं मिला, तो घबराहट बढ़ जाती थी. मन शंका-कुशंकाओं से भर उठता था. रह-रहकर उलटे-सीधे विचार मन में उठने लगते थे. हर हमेशा हमारी नजरें पोस्टमैन को आता देखने के लिए तरसने लगती थीं. लेकिन अब ऐसा नहीं होता. जब से हमने संचार-क्रांति के युग में प्रवेश किया है, आज एक-दूसरे से जुड़ने के नये-नये उपकरण हमारे पास आ गए हैं. था वह कोई जमाना, जब कालिदास ने मेघदूत के माध्यम से यक्ष का संदेश उसकी प्रियतमा तक पहुँचाया था. अब जमाना ट्विटर का है, एसएमएस का है. पलक झपकते ही संदेशा दुनिया के एक कोने से दूसरे कोने में पहुँच जाता है..आज दुनिया मुठ्ठी में है. सुदूर देश में बैठा कोई बेटा, अब भारत के किसी गाँव में रह रहे अपने पिता से, ऐसे बात कर सकता है, जैसे सामने बैठा हो. विज्ञान का यह खेल किसी करिश्में से कम नहीं है. सदियों पुरानी कल्पनाओं को आज हम साकार होते देख रहे हैं.. पर इस “मिलन” में वह ऊष्मा है क्या, जो पांच पैसे के पोस्टकार्ड को हाथ में लेकर महसूस की जाती थी?. संवेदना की इस मीठी-सी छुअन का अहसास हाथों

से फ़िसलते जाना, शायद मेरी पीढ़ी को हो,लेकिन अगली पीढ़ी को जिसने उस “छुअन” को कभी महसूस तक न किया हो, तो उसका अभाव उन्हें खलेगा भी कैसे? खले भले ही नहीं, पर वंचित तो जरुर रह जाएगी,इस अनुभव से.

घर के बाहर डाकिये की साइकिल की घंटी का बजना या फ़िर “चिठ्ठी आयी है” वाले तीन शब्दों का गूंजना,जाने कितनी-कितनी और कैसी-कैसी तरंगे मन में उठने लगती थीं. या फ़िर घर के मुंडेर पर बैठकर किसी कौवे की कांव-कांव करके संदेश दे जाना, कभी किसी कबूतर का संदेश देकर “उस पार” पहुंचाने का आग्रह करना या फ़िर मेघदूत को दूत बनाकर संदेशा भेजना, ये कल्पनाएं ही भीतर भावनाओं का ज्वार उठा जाती थीं. यादों के अंबार लग जाया करते थे. अब ऐसा नहीं होता. पलक झपकते ही अनेक एस.एम.एस. आपके स्क्रीन पर उभरने लगते हैं. पर पिता की हाथ की लिखी कोई चिठ्ठी का होना, या फ़िर मां के हाथ से लिखी चिठ्ठी का होना, कई-कई अहसासों को महसूसना होता था. चिठ्ठी मे लिखा हर एक अक्षर शरीर में ऊषमा भर जाता था. पर अब ऐसा नहीं होता. चिठ्ठी लिखना अब सपना बन कर रह गई है. अब शायद ही कोई भाग्यशाली मिलेगा, जिसे अब भी पत्र प्राप्त हो रहे हैं.

परम्परा की यह कल-कल कर बहती नदी सूखती जा रही है. यदि यह कहा जाए कि वह लगभग सूख चुकी है, तो शायद ऐसा कहना कोई अतिश्योक्ति नहीं होगा
थोड़ा हम अपने अतीत की ओर चलें, जब डाक भेजने की कोई कारगर व्यवस्था नहीं थी. तब भी तो पत्र लिखे जाते थे !. पत्र किसी पत्र-वाहक के जरिए पहुँचाए जाते थे. कभी वह कबूतर होता या हंस या फ़िर बादलों को पत्र-वाहक बनाकर भेजे जाने वाले संदेशों के बारे में जानने और पढ़ने को मिलता है, तो आश्चर्य भी होता है. पत्र लिखने के लिए मौसम नहीं, मन चाहिए. यक्ष भी जानता होगा कि बादल पत्र नहीं ले जा सकते, लेकिन कवि के मन की उड़ान तो देखिए कि यक्ष ने अपने एकांत को काटने और अपने -शोक-संतप्त हृदय को धैर्य दिलाने के लिए मेघों का अवलंबन लिया और अपने मन के उद्‌गार अपनी प्रिया तक पहुँचाने के लिए निवेदित किया. कालीदास जी के काव्य-कौशल का जादू देखना हो तो कृपया आप

उनकी कृति “मेघदूत” को उठाकर जरुर देखिए. रामगिरि पर्वत से होते हुए वे आपको भारत के रमणीय स्थानों से भ्रमण करवाते हुए पर्वतराज हिमालय तक ले जाते हैं. ऐसी अद्भुत यात्रा का वर्णण आपको अन्यत्र और कहीं नहीं पढ़ने को मिलेगा. एक बानगी देखिए.

यक्ष संदेश

सन्तप्तानां त्वमसि शरणं तत्पयोद प्रियायाः...संदेशं में हर धनपतिक्रोधविश्लेषितस्य....गन्तव्या ते वसतिरलका नाम यक्षेश्वराणां....बाह्योद्दानस्थितहरश्चन्दिकाधौतहचन्द्रधौतमर्या...

हे मेघ ! तुम ताप से पीड़ितों की रक्षा करने वाले हो, इसलिए कुबेर के क्रोध से वियुक्त मेरा संदेश ले जाओ. तुम्हें यक्षेश्वरों के निवास स्थान अलका है जाना,,,,जहां महलों पर बरसती चांदनी और शिव ललाट पर स्थित है चंद्रमा.
पत्रों की अगली बानगी भी देखिए....

महाकवि सूरदास- उध्दव का गोपियों को पाती देना

पाती मधुवन ही तैं आई...सुन्दर स्याम आपु लिखी पठई, आइ सुनौ री माई / अपने-अपने गृह तैं दौरीं, लै पाती उर लाई / नैननि निरख निमेष न खंडित,प्रेम-तृषा न बुझाई / कहा करौं सूनौ यह गोकुल,हरि बिन कछु न सुहाई / सूरदास ब्रज कौन चूक तौं,स्याम सुरति बिसराई

मीराबाई और गोस्वामी तुलसीदास जी का पत्र-व्यवहार.

<u>मीरा द्वारा तुलसीदास जी को लिखा पत्र</u>

स्वस्ति श्री तुलसी गुन-भूषण दूषण हरण गोसाईं
बारहीं बार प्रणाम करहुँ अब हरहु शोक-समुदाई
घर के स्वजन हमारे जैसे सबन उपाधि बढ़ाई
साधुसंग और भजन करत मोहिं देत कलेश

महाई सो तो अब छूटत नहिं क्यों है लगी लगन बरियाई
बालपने में मीरौं कीन्ही गिरधरलाल मिताई
मेरे मात तात सम तुम हो हरिभक्तन सुखदाई
मोजो कहा उचित करिबो अब सो लिखिये समुझाई

तुलसीदास द्वारा मीरा को पत्र का उत्तर

जाके प्रिय न राम-बैदेही
तजिये ताहि कोटि बैरी सम,जद्धपि परम सनेही
तज्यो पिता प्रल्हाद बिभीषन बंधु, भरत महतारी
बलि गुरु तज्यो कंत ब्रज-बनितन्हि, भये मुद-मंगलकारी
नाते नेह रामके मनियत सुहृद सुसेव्य जहां लौ
अंजन कहा आँखि जेहि फ़ूटै,बहुतक कहौ कहां लौं
तुलसी सो सम भांति परम हित पूज्य मानते प्यारो
जासों होय सनेह राम-पद, एतो मतो हमारो.

मेरे स्व.मित्र नईम की एक लंबी कविता का एक अंश...शीर्षक है-खतोकिताबत के मौसम फ़िर कब आएंगे?.साथ ही अन्य साहित्यकारों की कविताएं जो चिठ्ठी-पत्री को लेकर लिखी गई थीं.

नईम **चिठ्ठी-पत्री, खतोकिताबत के मौसम**
फ़िर कब आएंगे?..
रब्बा जाने, सही इबादत के मौसम
फ़िर कब आएंगे?

अमृता प्रीतम
चांद सूरज दो दवातें कलम ने डोबा लिया
लिखतम तमाम धरती पढ़तम तमाम धरती
साईंसदानों दोस्तों !

गोलियों, बंदूकों,एटम बनाने से पहले इस खत को पढ़ लेना

गुलजार

बहुत दिन हो गए देखा नहीं ना खत मिला कोई
बहुत दिन हो गये सच्ची
तेरी आवाज के बौछार में भीगा नहीं हूं मै!

रघु यादव -

भैया अगले हफ़्ते आना, घर से चिठ्ठी आई है
थोड़े से पैसे भिजवाना, घर से चिठ्ठी आई है.
भाभी को उलटी आती है,मां की तबियत ठीक नहीं
बापू का चश्मा बनवाना है, घर से चिठ्ठी आई है.

वीर सक्सेना

पत्र तुम्हारा मिला, एक भी अक्षर नहीं लिखा
समझ गया मैं, जीवन में कितना सूनापन है.

स्व.गोविन्दसिंह असिवाल-(पोस्ट्मास्टर).

आकाश सा फ़ैला समन्दर
और कश्ती चिठ्ठियां !
आवागमन महंगा बहुत है
सिर्फ़ सस्ती चिठ्ठियां !
इन्द्रधनुषी पुल सरीखी
ये व्यवस्था है निरन्तर
तितलियों के झुंड जैसी
ये बसन्ती चिठ्ठियां !

शिव डोयले

बीन-बीन कर देख रहा हूं...डाल से टूटा..एक-एक पत्ता, तुमने कहीं पतझड़ के बहाने,मुझे प्यार भरा खत तो नहीं लिखा.

सुधीर सक्सेना-

चिठ्ठियां बांट लो..तो बताना रामप्रसाद, इस बार कित्ती चिठ्ठियां बैरंग लौटीं, कितनों के घर मनीआर्डर आना बंद हुए, कहां आग लग गई, कहां गोली चल गई?

डा.सविता मिश्र

न जाने कब चली जाती है चांदनी,चांद के पास चुपके से/और छत की मुडंरी पर कूक उठती है चिरैया/तब भींगी-भीगीं सी छत पर, बहुत अच्छा लगता है मुझे/भोर के उजास में तुम्हारा खत पढ़ना,

निरंजन श्रोत्रिय

अब जबकि हम खत लिखना भूल रहे हैं /डाकिये की साइकिल चल रही, तने हुए तारों पर / हम भले न करे प्रतीक्षा उसकी/हमारे बच्चे याद कर रहे हैं निबंध उस पर/ हम खुश हैं खिलखिला रहे हैं/डाकिया भी हंस रहा होगा इस वक्त?

सीएल.चौरसिया "तुष्यम"

परिचित है वह हर मौसम के मिजाज, गीले सूखे ठंडे दिन दोपहरी तपते में/ सबकी आशा भावनाओं का तूफ़ान/और लिए थैले में सागर का वह शख्स फ़िर रहा/फ़िर रहा बाटता डाक

गोवर्धन यादव.- (लंबी कविता का एक अंश) कबूतर के माध्यम से भेजा गया पत्र.

जा उड़ जा रे उस ओर
जहाँ मेरे सांवरिया रहते हैं
जो हरदम मेरे उर में बसते हैं
लेकर ये छोटा सा सन्देश
कि बिना तुम्हारे लगता
जीवन सूना-सूना.....

काकेशियन कवि-काइसिन कुलीव.

तुमसे भरा नहीं गया
अपनी नोट-बुक से फ़ाड़ा गया
एक नन्हा सा पन्ना भी

जब मैं,
तुम्हें खुद लिखने बैठा हूं
जगह कभी पूरी नहीं पड़ती
इसलिए
मैं अपने खत को खत्म करता हूं
एक ऊष्मा भरे चुंबन से
जो डाक-टिकट के नीचे छिपा होता है.

पत्रों की अपनी एक रंगीन दुनिया रही है. ये एक किस्म की बेकरारी है. करार तब ही आता है जब कोई आत्मीय संदेश लंबे इंतजार के बाद आप तक पहुँचता है. इन संदेशों को भेजने के लिए, सिर्फ़ और सिर्फ़ एक गर्मजोश दिल चाहिए. पत्रों का आदान-प्रदान सिर्फ़ प्रेमी और प्रेमिका के बीच ही हो, यह जरुरी नहीं है. मोहनदास करमचंद गांधी, जवाहरलाल नेहरु द्वारा लिखी गईं चिठ्ठियां, महान साहित्यकार मैथिलीशरण गुप्त, चन्द्रधर शर्मा गुलेरी, गोर्की की चिठ्ठी तोल्स्योय के नाम, विवेकानंद द्वारा युवाओं को लिखे पत्र, डार्विन के पत्र, बोनापार्ट के पत्र, बहादुरशाह जफ़र की चिठ्ठियाँ, लिंकन का अपने बेटे के अध्यापक को पत्र, संदेश भी था और समग्र शिक्षा-समाज के लिए आज तक काम में आने वाला आदर्श भी था. एक व्यक्ति जब दूसरे को पत्र लिखता है तो वह पत्र मुख्यतः एक ही व्यक्ति के लिए होता है, **लेकिन जब एक बुद्धपुरुष दूसरे व्यक्ति को पत्र लिखता है, तो वह संदेश केवल एक व्यक्ति के लिए नहीं, पूरे जगत के लिए होता है.** स्वतंत्रता संग्राम के समय में भी पत्रों का व्यवहार क्रांतिकारियों के बीच होता था. वे एक दूसरे का हौसला बढ़ाते और कार्ययोजनाएं बनाया करते थे. ऐसे अनेक पत्र संग्रहालयों में करीने से एकत्रित कर सुरक्षित रखे गए हैं. इन महापुरुषों द्वारा लिखे गए पत्र आज एक बेशकीमती धरोहर बन गए हैं. इन पत्रों से उनके उस समय की परिस्थितियों और उनके व्यक्तित्वों के अंतरद्वंद्व का पता चलता है.. दिलचस्प यह है कि जो कामनाएं होती हैं. वे मानवीय बेचैनियों के साझे का साया होती है. वे लंबे एकालाप हो सकते हैं और अकेलेपन से लड़ने का शस्त्र भी.

इक्कीसवीं सदी में युवा पत्र लेखन की कला को भूल रहे हैं. पत्र लेखन ही नहीं, बल्कि सुंदर, घुमावदार और स्पष्ट अक्षर लिखने की कला मुझे आज से पैसठ साल पहले मिली थी. अगर जरा-सी भी अक्षरों में लापरवाही होती तो हथेली पर छड़ी बरसने लगती थी. कभी पिटाई भी हो जाया करती थी.

प्रसिद्ध विचारक गैरिसन कीलर लिखते हैं- पत्र लिखते रहना चाहिए, न लिखें तो भावनाएं सूख जाएं. इन दिनों अधिकतर लोग खुद पत्र लिखने की जहमत छोड़ झट फ़ोन घुमा देते हैं. संकोची के लिए टेलीफ़ोन वैसे ही सुखद है जैसे हवाई द्वीप की यात्रा कठिन मनःस्थिति से बाहर निकलने का रास्ता है. मानिए पत्र ही बेहतर है. आप फ़ोन उठाकर भविष्य से संपर्क नहीं कर सकते, और न उन बच्चों को अपने समय की कहानी ही सुना सकते हैं. आपको इसके लिए कागज कलम ही उठाना होगा.

चिठ्ठी-पत्री को लेकर फ़िल्मकारों ने भी पत्र-लेखन को अपना विषय बनाया और स्वनाम धन्य साहित्यकारों ने गीत लिखे,जो आज भी रेडियो के माध्यम से सुनने को मिलते हैं. गीत सम्राट नीरज ने एक गीत फ़िल्म **कन्यादान** के लिए लिखा, उस गीत की बानगी देखिए–लिखे जो खत तुझे. जो तेरी याद में हजारों रंग के, सुबह हुई तो फ़ूल बन गए, रात जो आई तो सितारे बन गए. फ़िल्म **संगम** मे प्रेम-पत्र को लेकर लिखा गीत- ये मेरा प्रेम-पत्र पढ़कर तुम नाराज न होना...फ़िल्म **मौसम** से- हाय-हाय एक लड़का मुझको खत लिखता है. फ़िल्म **अर्धांगनी**–तेरा खत लेकर सनम, फ़िल्म **जीना इसी गली में**- जाते हो परदेश पिया, जाते ही खत लिखना. फ़िल्म-**बेखुदी..**खत में तेरा नाम लिखा..फ़िल्म-**मैंने प्यार किया**...कबूतर जा-जा जा...फ़िल्म **नाम**...चिठ्ठी आई है. अपने प्रियतमको याद करते हुए स्व,जगजीत जी ने एक बेहद ही भावुक गजल गाई है....चिठ्ठी न कोई संदेश, न जाने वह कौन-सा देश, पिया तुम चले गए...सुनकर मन द्रवित हो उठता है.. ऐसे सुन्दर-सुन्दर गानों को सुनकर भी क्या आपका मन चिठ्ठी लिखने के लिए आतुर नहीं होता? अभी भी कुछ बिगड़ा नहीं है. बस मन में ठान लीजिए. कलम उठाइए, गहरी सांस लीजिए और बस लिखना शुरु कर दीजिए. एक वाक्य लीखिए, उसके बाद एक और

फ़िर एक और..... प्यार, गुस्सा, भ्रम जो भी आपके मन में है उसे कागज पर उतरने दीजिए. पर लिखिए जरुर...याद रखें... वाट्सप पर भेजे गए संदेशों का जीवन क्षण-भंगुर होता है, पलक झपकते ही वह पानी के बुलबुले-सा ओझल हो जायेगा, लेकिन लिखा गया पत्र, बरसों-बरस बीत जाने के बाद भी आप उसे पढ़ सकेंगे. कोई पढ़े न पढ़े, लेकिन जब भी आप उसे उठाकर पढ़ेंगे, द्विगुणित आनन्द से सराबोर हो उठेंगे और शायद यह भी कह उठेंगे..यार.....वे भी क्या दिन थे?

कृपया रचनाकार को मेल भेज कर अपने विचारों से अवगत करायें